

# योगिनीहृदयम्

व्रजवल्लभद्विवेदः



## विषय-सूची

### उपबोध्यात

योगिनीहृदय और दीपिका-१, मातृकाओं का परिचय-१, प्रस्तुत संस्करण-३, परारपंचाशिका की मातृकाएँ-४, परारपंचाशिका का परिचय-५, श्रीकुल (त्रिपुरा) का साहित्य-६, योगिनीहृदय और वामकेश्वर तन्त्र-९, योगिनीहृदय की टीकाएँ-१०, मूल और टीका में स्मृत ग्रन्थ-ग्रन्थकार-११, त्रिपुरा सम्प्रदाय की प्रवृत्ति-१३, चक्रसंकेत-१६, मन्त्रसंकेत (भाषार्थ, सम्प्रदायार्थ, निगमार्थ, कौलिकार्थ, सर्व-रहस्यार्थ और महातत्त्वार्थ)-२१, पूजासंकेत (विशिष्ट पूजा)-२९, जप-३१, पचास या इक्यावन पीठ-३३, नौ आधार-३४, वर्णों और तत्त्वों की उत्पत्ति-३६, कामकला-४०, छः अथवा आठ धातु-४१, व्याकुलाक्षर-४१, क्रम-व्युत्क्रम-४२, दीपिका की कुछ विसंगतियाँ-५३, आमार प्रदर्शन-४४

### १. चक्रसंकेत

दीपिकाकार का मंगलचरण	१-३
शास्त्र की अवतारणा	४-६
शास्त्र की गोपनीयता और परम्परा	६-८
शास्त्र के अधिकारी	८-१०
शास्त्र के अधिकारी एवं शास्त्रज्ञान का फल	१०-११
संकेतत्रय का उद्देश	१२
संकेतत्रय के ज्ञान का फल और अनुबन्ध-चतुष्टय	१३
चक्रसंकेत का उपक्रम	१४
चक्र का अवतार क्रम	१४-१६
द्वैत और त्रिकोण चक्र	१६-२०
कामकला का स्वरूप	१७-२१
नवयोनि अथवा अष्टार चक्र, उसकी अम्बिकारूपता	२१-२५
अन्तर्दशार चक्र	२५-२६
बहिर्दशार चक्र	२७-२८
चतुर्दशार चक्र, चक्रत्रय की रौद्रीरूपता	२८-२९
अवशिष्ट चक्रत्रय और उनकी वामा-भ्येष्टारूपता	३०
शास्त्रतीता आदि पाँच शक्तियों (कलाओं) की श्रीचक्रमय वासना	३१
नौ चक्रों में स्थित शक्तियाँ और उनका स्वरूप (वासनान्तर)	३१-३३

चक्र की कामकरारूपता	३३-३४
अकुल आदि स्थानों में चक्र की विविध भावना	३४-४२
अकुल और कुल मध्यवर्ती नवाचार निरूपण	३४-४०
बिन्दु से उन्मनी पर्यन्त नाद-कलाओं का स्वरूप और उन्वारण काल	४२-४२
देश और काल से अनवच्छिन्न निसर्गसुन्दर परम तत्त्व	४२-४३
अम्बिका आदि, शान्ता आदि शक्तियाँ तथा वाक्चतुष्टय	४३-४७
अम्बिका आदि, शान्ता आदि शक्तियाँ तथा पीठचतुष्टय	४७-६०
लिङ्गचतुष्टय	६०-६३
विद्या तथा शक्तिचतुष्टय आदि की वाच्यवाचकता	६३
आयदादि अवस्था चतुष्टय	६४
स्वसंविदारमक त्रैपुर स्वरूप की सर्वोत्कृष्टता	६४-७४
संविद् की मुद्रारूपता और मुद्रा पद की निरूपित	७४-७६
दशविध मुद्राओं का आन्तर और बाह्य स्वरूप	७६-८८
परम तत्त्व की चक्रमयता	८९-९०
श्रीचक्र की विद्या तथा नवधा भावना	९०-९४
श्रीचक्र का सृष्टि-संहार क्रम और त्रिपुरा चक्र के ज्ञान का फल	९४-९७
श्रीचक्रों का स्वरूप और उनके नामों की निरूपित	९७-१००
श्रीचक्र में महात्रिपुरसुन्दरी की पूजा का विधान	१००-१०१
चक्रसंकेत की फलश्रुति	१०१-१०३

## २. मन्त्रसंकेत

मन्त्रसंकेत का उपक्रम और उसके ज्ञान का फल	१०४-१०५
करशुद्धिकरी आदि नौ विद्याएं	१०५-१११
नौ विद्याओं का न्यास	१११-११३
अकुल आदि नवाधारों में चक्रेश्वरियों के साथ नौ चक्रों का न्यास	१०३-११४
त्रिपुरा आदि नौ चक्रेश्वरियों की नौ चक्रों में पूजा	११४-११५
नौ विद्याओं की एकाकारता	११६
मन्त्रसंकेत की पद्धति	११६-११८
माधार्थ का निरूपण (श्रीविद्या का अक्षरार्थ)	११८-१२६
मातृकाचतुष्टय तथा कामकला	१२८-१३४
सम्प्रदायार्थ का निरूपण	१३६-१७४
विद्या की विश्वमयता तथा विश्वोत्तीर्णता	१३८-१४५
चर्चिष्ठतत्त्व निरूपण	१४६-१४९

त्रिविध प्रमाणा (सकल, प्रलयाकल, विज्ञानाकल)	११२-११६
गुरु पारम्पर्य क्रम	१७२-१७३
निगमार्थ का निरूपण	१७४-१७७
कौलिकार्थ का निरूपण (चक्र, देवता, विद्या, गुरु और शिष्य की एकता)	१७८-१९८
वाक्चतुष्टय	१९९-१९४
सर्वरहस्यार्थ का निरूपण (स्वात्मबुद्धि)	१९८-२०९
महातत्त्वार्थ का निरूपण (विद्योत्सोर्ण-विश्वमय तत्त्व में स्वात्मनिबोधन)	२०२-२१२
महातत्त्वार्थ के अधिकारी और अनधिकारी	२१३-२१६
मन्त्रसंकेत की फलश्रुति	२१७-२१८
<b>३. पूजासंकेत</b>	
त्रिविध पूजा—नाम और लक्षण	२१९-२२३
परा पूजा की श्रेष्ठता और उसका स्वरूप	२२३-२३०
बोदा न्यास (गणेश, गुरु, नम्रव, योगिनी, राशि, पीठ)	२३०-२४२
श्रीचक्र न्यास (संहार क्रम)	२४३-२५९
श्रीचक्र न्यास (सृष्टि क्रम)	२५९-२६८
करशुद्ध्यादि न्यास	२६८-२६९
विद्या न्यास	२६९-२७१
तत्त्व न्यास	२७१-२७३
परा न्यास	२७३-२७४
चतुर्विध न्यास का कालविभाग	२७४-२७५
आसन परिकल्पन और बलिदान	२७५-२७७
विष्णाप्रसारण और प्राकार-चिन्तन	२७७-२८०
सामान्यार्घ्य से सूर्य आदि नवग्रहों का पूजन	२८०-२८२
बाह्य श्रीचक्र का उद्धार व पुष्पाञ्जलि निवेदन	२८२-२८५
सामान्यार्घ्य की विधि (वह्नि, सूर्य और इन्दु कलाओं का अर्चन)	२८५-२९२
विशेषार्घ्य की विधि	२९२
गुल्पादुका का पूजन	२९३
प्रसादग्रहण, आन्तर होम और पूर्णाहुति	२९४-२९९
श्रीचक्र की पूजा का क्रम	३००-३०१
गणेश, बटुकभैरव और गुल्फकि का पूजन	३०१-३०२
बैन्दव चक्र में कामेश्वर-कामेश्वरी का अर्चन	३०२-३०७
नित्यकिल्बिषा आदि तिथिनिश्चयों का पूजन	३०७-३०८, ३५७



प्रकटा आदि नौ योगिनियों का आचरण देवताओं के	
साथ त्रैलोक्यमोहन आदि नौ चक्रों में पूजन	३०८-३५६
मूललिपि का विन्यास क्रम	३२५-३४५
चक्रमूला के बाद कुण्डलीय निवेदन	३५७-३५८
पुष्पाञ्जलि समर्पण के बाद जपविधान	३५८
कूटत्रय तथा कुण्डलीत्रय में नाद की भावना	३५८-३६२
जप के समय शून्यषट्क आदि की भावना	३६३
शून्यषट्क की भावना का प्रकार	३६३-३६४
अवस्थापंचक की भावना का प्रकार	३६५-३६८
विधुवस्तक की भावना का प्रकार	३६९-३७६
चक्रदेवताओं का तर्पण	३७६-३७८
नैमित्तिक पूजन	३७८-३७९
श्रीचक्र में ६४ करोड़ योगिनियों का निवास	३७९-३८०
अष्टाष्टक पूजा	३८०-३८१
गुरुपरम्परा से प्राप्त ज्ञान की फलवत्ता	३८१-३८२
नैवेद्य समर्पण एवं बलि निवेदन	३८२-३८७
शास्त्र की गोपनीयता	३८८
चुम्बक, ज्ञानसुम्ब और नास्तिकों की अगर्हता	३८८-३९०
ग्रन्थ की फलश्रुति	३९०-३९४

### परिशिष्ट

परापञ्चाशिका आद्यनाथविरचिता	४९५-४००
योगिनीहृदय-श्लोकार्थानुक्रमणी	४०१-४१२
परापञ्चाशिका-श्लोकार्थानुक्रमणी	४१३-४१४
मूले दीपिकायां च स्मृता ग्रन्थ-ग्रन्थकाराः	४१५-४१६
संकेतपरिचयः	४१७-४१८
दीपिकोद्भूतवचनानुक्रमणी	४१९-४२४